3 समास
(तत्पुरुष, कर्मधारय, द्वन्द्व)

दो या अधिक पदों को इस प्रकार मिलाना कि उनके आकार में कमी आ जाये और अर्थ भी पूरा-पूरा निकल जाय, इसी संक्षेप की क्रिया को समास कहते हैं;

जैसे– नराणां पतिः = नरपतिः, गङ्गः पुरुषः = गङ्गपुरुषः।

यहाँ पर 'नराणां पतिः' का वही अर्थ है, जो 'नरपतिः' का है, किन्तु 'नरपतिः' आकार में छोटा हो गया है।

समास के भेद

समास के छह भेद होते हैं–

१. अव्ययीभाव समास– पूर्व पद की प्रधानता अर्थात् पहला पद प्रधान होता है।
२. तत्पुरुष समास– उत्तर पद की प्रधानता होती है।
३. कर्मधारय समास– विशेषण और विशेष्य का समास।
४. द्विगु समास– संख्यावाचक शब्द के साथ समास।
५. बहुब्रीहि समास– अन्य पद की प्रधानता।
६. द्वन्द्व समास– दोनों पदों की प्रधानता।

1. तत्पुरुष समास

सूत्र–''उत्तरपद प्रधानः तत्पुरुषः।''

जिस समास में उत्तर पद के अर्थ की प्रधानता हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। वाक्य-प्रयोग में लिङ्ग, विभक्ति तथा वचन का प्रयोग भी उत्तर पद के अनुसार ही होता है। यथा– 'देवमन्दिरम्' का विग्रह है देवानां मन्दिरम्। यहाँ पर देव और मन्दिर दो पद हैं, परन्तु इनमें मन्दिर ही प्रधान है।

अलग-अलग विभक्तियों के अनुसार तत्पुरुष समास के छह भेद होते हैं–

१. द्वितीया तत्पुरुष– इसमें पूर्व पद द्वितीया विभक्ति का होता है और समास करने पर द्वितीया विभक्ति का लोप हो जाता है।

जैसे–
कृष्णं श्रितः = कृष्णाश्रितः
दुःखम् अतीतः = दुःखातीतः
गजम् आरूढः = गजारूढः
शरणम् आगतः = शरणागतः
सुखं प्राप्तः = सुखप्राप्तः
भयम् आपन्नः = भयापन्नः।

२. तृतीया तत्पुरुष– जब तत्पुरुष समास का पूर्व पद तृतीया विभक्ति का हो और समास करने पर तृतीया विभक्ति का लोप हुआ हो।

जैसे– वाणेन आहत: = वाणाहत:
नखै: भिन्न: = नखभिन्न:
नेत्राभ्यां हीन: = नेत्रहीन:
मासेन पूर्व: = मासपूर्व:
पादेन खञ्ज: = पादखञ्ज:
गुड़ेन मिश्रम् = गुड़मिश्रम्
हरिणा त्रात: = हरित्रात:।

३. चतुर्थी तत्पुरुष–जहाँ पूर्व पद चतुर्थी विभक्ति का होता है और समास करने पर चतुर्थी विभक्ति का लोप हो जाता है।

जैसे– रक्षाय इदम् = रक्षार्थम्
भूताय बलि: = भूतबलि:
धनाय कामना = धनकामना
कुम्भाय मृत्तिका = कुम्भमृत्तिका
ब्राह्मणाय हितम् = ब्राह्मणहितम्
धनाय अर्थम् = धनार्थम्।

४. पञ्चमी तत्पुरुष–इसमें पहला पद पंचमी विभक्ति का होता है और समास करने पर पंचमी विभक्ति का लोप हो जाता है।

जैसे– अश्वात् पतित: = अश्वपतित:
चौराद् भीत: = चौरभीत:
बन्धनाद् मुक्त: = बन्धनमुक्त:
सिंहाद् भीत: = सिंहभीत:
हरे: त्रात: = हरित्रात:
मार्गात् भ्रष्ट: = मार्गभ्रष्ट:।

५. षष्ठी तत्पुरुष–इसमें पूर्व पद षष्ठी विभक्ति का होता है और समास करने पर षष्ठी विभक्ति का लोप हो जाता है।

जैसे– राज्ञ: पुरुष: = राजपुरुष:
गङ्गाया: जलम् = गङ्गाजलम्
प्रजाया: पति: = प्रजापति:
देवस्य मन्दिरम् = देवमन्दिरम्
मूर्त्या: पूजा = मूर्तिपूजा
विद्याया: आलय: = विद्यालय:।
हिमस्य आलय: = हिमालय:

विशेष– जब समस्त-पद 'अव्ययी' होता है तो विग्रह करते समय षष्ठी विभक्ति से युक्त शब्दों से पूर्व अव्ययवाचक शब्द–पूर्व, अधर, अर्ध इत्यादि शब्द आते हैं।

जैसे– पूर्वम् रागस्य = पूर्वराग:
अपरं रागस्य = अपरराग:

अधरं रागस्य = अधरराग:
अर्द्धम् फलस्य = अर्द्धफलम्।

६. सप्तमी तत्पुरुष–इसमें पूर्व पद सप्तमी विभक्ति का होता है और समास करने पर सप्तमी विभक्ति का लोप हो जाता है।

जैसे– युद्धे निपुण: = युद्धनिपुण:
कूपे पतित: = कूपपतित:
गुरौ भक्ति = गुरुभक्ति
नरेषु उत्तम: = नरोत्तम:
कलासु निपुण: = कलानिपुण:
कार्ये कुशल: = कार्यकुशल:।

अभ्यास-प्रश्न-1

१. निम्नलिखित पदों में विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए–

शरणागत:, कूपपतित:, बन्धनमुक्त:, सुखप्राप्त:, देवपुरुष:, अश्वपतित:, वाक्कलह:, मासपूर्व:, दानपात्रम्, धनार्थ:, विद्याप्रवीण:, रणकुशल:।

२. निम्नलिखित शब्दों में समास कीजिए तथा समास का नाम लिखिए–

मासेन पूर्व:, कूपे पतित:, पुत्राय हितम्, भ्रात्रे सुखम्, बाणेन विद्ध:, सुखम् आपन्न:, देवानां पति:, नराणां पति:।

३. तत्पुरुष समास किसे कहते हैं? तत्पुरुष समास के भेद लिखिए।

तत्पुरुष के अन्य भेद

उक्त भेदों के अतिरिक्त तत्पुरुष समास के तीन भेद और होते हैं–

(१) उपपद तत्पुरुष–इसके उत्तरपद में कोई क्रियावाचक शब्द होता है, इसीलिए इस समास को उपपद कहते हैं; यथा–

विग्रह	**समस्त-पद**	**अर्थ**
मर्म जानाति	मर्मज्ञ:	मर्म को जानने वाला
चर्म करोति	चर्मकार:	चमार
कम्बलं ददाति	कम्बलद:	कम्बल देने वाला
प्रभां करोति	प्रभाकर:	सूर्य

(२) नञ् तत्पुरुष–इसके पूर्वपद में निषेधार्थक 'अ' या 'अन्' शब्द का प्रयोग होता है–

न ब्राह्मण:	अब्राह्मण:	जो ब्राह्मण न हो।
न अश्व:	अनश्व:	जो घोड़ा न हो।
न उचित:	अनुचित:	जो उचित न हो।

विशेष नियम–जिस पद के साथ नञ् समास किया जाए यदि उस पद का आदि अक्षर 'अ' हो तो नञ् समास में 'अ' के आगे 'अन्' जोड़ दिया जाता है। यथा–अनश्व:।

(३) अलुक् तत्पुरुष–इस समास में पूर्वपद की विभक्ति का लोप नहीं होता। विभक्ति का लोप न होने के कारण इसका नाम अलुक् समास होता है। यथा–

विग्रह	समस्त-पद	अर्थ
परस्मै पदम्	परस्मैपदम्	दूसरे के लिए पद
आत्मने पदम्	आत्मनेपदम्	अपने लिए पद
वाच: पति:	वाचस्पति:	बृहस्पति
युधि स्थिर:	युधिष्ठिर:	युद्ध में स्थिर

अभ्यास-प्रश्न-2

१. **निम्नलिखित समस्त-पदों में विग्रह करके समास का नाम लिखिए–**
अनुक्त:, अनर्थम्, अनुपस्थित:, अनागत:।

२. **अलुक् तत्पुरुष किसे कहते हैं?**

2. कर्मधारय समास

सूत्र– ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्।''

यह तत्पुरुष समास का उपभेद है। इसका पूर्व पद विशेषण और उत्तर पद विशेष्य होता है। विग्रह करते समय विशेष्य के लिङ्ग, विभक्ति और वचन के अनुसार विशेषण में लिङ्ग, वचन और विभक्ति का प्रयोग होता है।

कर्मधारय समास के ५ भेद होते हैं–

१. विशेषण पूर्वपद-कर्मधारय– इस समास में पूर्वपद विशेषण तथा उत्तर पद विशेष्य होता है।

जैसे– कृष्ण: सर्प: = कृष्णसर्प:
नीलं उत्पलम् = नीलोत्पलम्
मधुरं फलम् = मधुरफलम्
श्रेष्ठ: पुरुष: = श्रेष्ठपुरुष:
महान् देव: = महादेव:
महती नदी = महानदी
महान पुरुष: = महापुरुष:

विशेष– बुरे के अर्थ में कुत्सित शब्द के स्थान पर 'कु' हो जाता है तथा अच्छे के अर्थ में सुन्दर के स्थान पर 'सु' हो जाता है।

जैसे– सुन्दर: देश: = सुदेश:
सुन्दर: पुरुष: = सुपुरुष:
कुत्सित: पुत्र: = कुपुत्र:
कुत्सित: राजा = कुराजा।

२. उपमान-पूर्वपद कर्मधारय– जिस कर्मधारय समास में उपमान का पहले प्रयोग हो उसे उपमान पूर्वपद कर्मधारय समास कहते हैं। इसका इव के साथ प्रयोग करते हैं।

जैसे– घन इव श्याम: = घनश्याम:
दुग्धम् इव धवलं = दुग्धधवलम्
चन्द्र इव मुखम् = चन्द्रमुखम्
कमलम् इव कोमलम् = कमलकोमलम्
नीरद: इव श्याम: = नीरदश्याम:

३. उपमानोत्तरपद कर्मधारय– जिस समास में पहले उपमेय और बाद में उपमान हो, उसे उपमानोत्तरपद कर्मधारय समास कहते हैं।

जैसे– मुखं चन्द्रः इव = मुखचन्द्रः
नरः सिंहः इव = नरसिंहः।

४. विशेष्य-उभयपद कर्मधारय– जिस समास में दो विशेष्यों में से एक का विशेषण के समान प्रयोग होता है, वह विशेष्य-उभयपद कर्मधारय समास होता है।

जैसे– वायसौ च तौ दम्पती = वायसदम्पती।
आम्रश्चासौ वृक्षः = आम्रवृक्षः।

५. विशेषण-उभयपद कर्मधारय– जिस समास में दोनों पद विशेषण होते हैं, उसे विशेषण उभयपद कर्मधारय समास कहते हैं।

जैसे– रक्तश्च पीतः = रक्तपीतः
कृतं च अकृतं च = कृताकृतम्
शीतं च उष्णम् = शीतोष्णम्

अभ्यास-प्रश्न-3

१. निम्नलिखित पदों में समास कीजिए तथा समास का नाम लिखिए–

अधरः पल्लवः इव, नरः सिंह इव, महान् चासौ देवः, महांश्चासौ ऋषिः, महान् चासौ आत्मा, मुखं चन्द्र इव।

२. निम्नलिखित पदों में विग्रह करते हुए समास का नामोल्लेख कीजिए–

देवपुरुषः, महापुरुषः, घनश्यामः, शीतोष्णम्, सुपुरुषः, मधुरफलम्, नीलोत्पलम्, नीललोहितः।

3. द्वन्द्व समास

सूत्र– ''उभयपद प्रधानो द्वन्द्वः।''

जिस समास में दो या अधिक पद जुड़े हुए हों और सभी पद प्रधान हों, वह द्वन्द्व समास कहलाता है। इसमें 'च' का अर्थ छिपा रहता है।

जैसे– हरिश्च हरश्च = हरिहरौ
रामश्च लक्ष्मणश्च = रामलक्ष्मणौ

द्वन्द समास तीन प्रकार का होता है–

१. इतरेतर द्वन्द्व– इस समास में दो या अधिक पदों का योग होता है। दो पदों के लिए द्विवचन और अधिक पदों के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है। लिङ्ग अन्तिम पद के समान प्रयोग किया जाता है।

जैसे– भीमश्च अर्जुनश्च = भीमार्जुनौ
पिता च पुत्रश्च = पितापुत्रौ
नरश्च नारी च = नरनार्यौ
रामश्च कृष्णश्च = रामकृष्णौ
बालश्च वृद्धश्च = बालवृद्धौ

२. समाहार द्वन्द्व– जिस समास में अनेक पदों के समूह का बोध होता है, उसे समाहार द्वन्द्व कहते हैं। इसमें समास करते समय नपुंसकलिङ्ग एकवचन का प्रयोग होता है।

जैसे– पाणी च पादौ च = पाणिपादम्
रथाश्च अश्वाश्च = रथाश्वम्
अहिश्च नकुलश्च = अहिनकुलम्
मथुरा च पाटलिपुत्र च = मथुरा-पाटलिपुत्रम्
अहः च रात्रि च = अहोरात्रम्

३. एकशेष द्वन्द्व– जिस सामासिक पद में समान रूप में प्रयुक्त होने वाले शब्दों में से केवल एक पद शेष रह जाता है और अपने भाव को विभक्ति व वचन के अनुसार प्रकट करता है, वहाँ एकशेष द्वन्द्व समास होता है।

जैसे– माता च पिता च = पितरौ
पुत्रश्च पुत्री च = पुत्रौ
रामश्च रामश्च = रामौ
हंसश्च हंसी च = हंसौ
युवा च युवती च = युवानौ

अभ्यास-प्रश्न-4

१. निम्नलिखित पदों में समास कीजिए तथा समास का नाम लिखिए–
पत्रम च पुष्पं च तोयम् च, वृक्षश्च वृक्षश्च, रथश्च अश्वश्च, माता च पिता च, दधि च घृतं च, पुत्रश्च पुत्री च, पाणी च पादौ च।

२. निम्नलिखित पदों में समास-विग्रह कीजिए तथा समास का नाम लिखिए–
अहोरात्रः, पितरौ, गंगायमुने, हरिहरौ, सूर्यचन्द्रौ, अहर्निशम्, राधाकृष्णौ, ब्राह्मणौ।

●●●